Lecture No-24

Unit-12

डॉ. अरविन्द झा
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग
मारवाड़ी महाविद्यालय
दरभंगा
मो.- 9040201409

कृति राजकमलक
"घड़ी"

राजकमल चौधरी
(मणीन्द्र नारायण चौधरी)

मैथिली साहित्यमे राजकमलजी धूमकेतु सदृश छथि। हिनका कथा, कविता आ उपन्यास सँ मैथिली साहित्य के समृद्ध कयलनि। मैथिली कथा आ कविता मे हिनका नव आयाम अनलनि आ आहि पथ पर हिनकहि धारि अग्रसर अछि। हिनक जन्म 13.12.1929 ई० मे भेलनि आ अल्पायु मे दिवंगत भऽ गेला। हिन्दी साहित्य मध्य सेहो हिनक बहुत नाम अछि। ई अपन रचना मध्य सामाजिक उत्थान-पतन वर्णन कयने छथि।

कथाक नायक रजनीकान्त पटनाक राजेन्द्र नगर मे रहैत छथि। ओ इतिहास विभागक प्राध्यापक छलाह। अपन घर मे ओना सभ वस्तु रखने छलाह परन्तु हुनक घर मे एकोटा घड़ी नहि छलन्हि ओ समय अनुकूल नहि चलैत छथि। कारण

उठलहुँ नरमन भोर आ गरमन ~~सुतलहुँ~~ सुतलहुँ नरमन राति।

कथानायकक परिवार मे प्रोफेसर चन्द्रकुमार सहित पाँच सन्तान - जया, विजय, प्रिया, राकेश आ चन्द्रेश सम्मिलित छला। विधवा मौसी उर्मिला देवी सेहो रहैत छथि जे प्राइमरी स्कूलक मास्टरनी छथि। ओना तऽ चन्द्रकुमार कोनो कसर नहि छनि उ घर मे छला। घड़ी नहि छनि जाहि कारणे बच्चा सभ के स्कूल जाय मे सदिखन देरि भऽ जाइत छैक। कतेको बेर चन्द्रकुमार घड़ी दऽ कहैत छथिन्ह जे मुदा रजनीकान्त पर नजर कोनो प्रभाव नहि। हुनका ~~घड़ी~~ घड़ीक नामे सँ घृणा छनि। ई गप्प परिवारक सभ मैथिल लोकनि के बुझल छनि।

रजनीकान्त के घड़ी नहि पो रहला सन्ता कोनो समयक त्रुटि नहि होइत छनि। ठीक सात बजे सन्ध्या मोसदहपुरक रकरा मकान मे पहुँचि जाइत छथि। तीन वर्ष सँ ई परम्परा चलि रहल अछि। बैनीपट्टीक ~~मुकुल~~ मुकुलमान नामक मुसलमान अछि। अमजद मियाँ पाँचो वक्त नमाज पढ़ैत अछि मुदा ढोलक थाप पर लोरिक, सलहेस आदिक गीत गएबा मे पारंगत अछि।

अमजद मियाँ अपन गामक पैघ लोक खूब जमीन जथा छला। ओ चूड़िहारिन बेटी जहुरनी सँ निकाह कएलक। जहुरनी बड़ सुन्दर छल, कोनो मिथिलानी सँ कम नहि।

Page No.:
Date: / /

जड्डुरनी के पेट सँ पाथर नइ गेलैक । ओ आ अहमद मियाँ संग ईलाज के वास्ते पटना आयल। कथानायक के ओहिठाम भेटल। हुनके कहला अनुसार डाक्टर सँ देखाओल, किछु दवाई, जाँच लिखल गेल, डेरा पुरबा कोल कथानायक मित्र रजनीकान्त भेंट नइ गेलखिन्ह। रजनीकान्त जड्डुरनी दिस देखिते रहि गेलाह, अहमद मियाँ सँ कहलखिन्ह आब हमरा सँ भेंट नइ गेल, कोनो चिन्ता नहि, बड़का डाक्टर हमर मित्र छथि। रजनीक कोनो चिन्ता जुनि करु, सबटा व्यवस्था हम कए देब। रजनीकान्त आ जड्डुरनीक आँखि मे उत्साह देखि कथानायक सबटा बुझि गेलाह।

जड्डुरनीक पेट सँ पाथर निकालल गेल। ओ एक बेर जे पटना आयल से सलीमपुर आपस नहि गेल। अहमद मियाँ सेहो गाम छोड़ि एतय एकटा 'पटना बैंगल स्टोर' खोलि लेलक। जड्डुरनी रजनीकान्त सँ कहलक हम आब पटने मे रहब। ई बात हिनक प्रसन्नताक ठेकान नहि रहल। नित्य साँझ मे सात बजे रजनीकान्त ओकर बासा पर पहुँचि जाइत छथि। अहमद मियाँ दोकान बन्द कए नौ बजे धरि घर अबैत अछि।

रजनीकान्त क पत्र

कथानायक के पुछैत छथि जे ई साँझ मे कतए जाइत छथि। तहि गप्प पर चुप रहलाह आ कहलनि हमरा नहि बुझल अछि।

Page No.:
Date: / /

एक दिन कथानायक रजनीबाबूक संग जहुरनीक ओहिठाम जाइत छथि। हुनक संग-संग चाह पिबैत आ रजनीबाबूक डेरामे अँगुरी धुनैत कथानायक कहलनि, हम जाइत छी, ताहि पर रजनीबाबू बजलाह जे हमरा बासा होइत जाउ एखन घर पर कहि देबनि हमरा ६५ जे मीटिंग मे छी तेँ विलम्ब सँ आएब। कथानायक हुनक डेरा लग पहुँचला त एक आवाज सुनलनि, चन्द्रशेखरी अमजद मियाँ के कहि रहल छलीह - हम तुमको जेहल पहुँचा देगा, मियाँ जी हमरा परिवार का शान्ती तुम खराब करेगा। तुम आओर तुम्हरा बीबी हो हम लोग चुप नहि बैठेगा। कथानायक ई सब सुनि बाहरेसँ घुरि जाइत छथि।

एहि घटनाक दू-तीन दिनक बाद एकरा मित्र कहलनि जे रजनी बाबू ओहाँ खोज कयने छलाह। डेरा पर गेलहुँ त देखलहुँ रजनी बाबू के हाथ मे घड़ी पहिरने। पुछलियनि त कहलनि समयानुसार चलबाक हेतु घड़ी आवश्यक छैक। हम बिदा भेलहुँ ई देखय ले जे अमजद मियाँ घड़ी किनलक की नहि।

—— x ——

डॉ॰ अरविन्द झा
मो- ८०४०२०९४०८